International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 08-09-2020; Accepted: 24-09-2020; Published: 09-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 66-69

डॉ. शील कौशिक की कहानियों में पारवारिक रिश्ते

दिलबाग सिंह

शोधार्थी, हिंदी विभाग, गुरु काशी विश्विद्यालय, तलवंडी साबो, बठिंडा, VPO, मसीतां, डबवाली, हरियाणा, भारत

सारांश

डॉ. शील कौशिक बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं। वे कविता, कहानी, लघुकथा, बाल साहित्य, समीक्षा आदि क्षेत्रों में निरंतर साहित्य रच रही हैं। अब तक उनके दो कहानी-संग्रह - 'महक रिश्तों की' (2003) और 'एक सच यह भी' (2008) प्रकाशित हो चुके हैं। इन दोनों कहानी-संग्रहों को अध्ययन का विषय बनाते हुए इनमें शामिल कहनियों में पारिवारिक रिश्तों की स्थिति को देखा गया है| इन कहानियों में पति-पत्नी के संबंधों, माँ-बाप और सन्तान के संबंधों, भाई-बहन, ननद-भाभी के संबंधो, सास–बहू के संबंधों आदि का यथार्थ चित्रण के साथ-साथ आदर्श रूप भी देखने को मिलता है| लेखिका ने परिवारों की स्थिति का बड़ा बारीक विश्लेषण किया है|

मूल शब्द: परिवार, रिश्ते, यथार्थ, आदर्श

प्रस्तावना

शोध के लिए आलोचनात्मक विधि को अपनाते हुए डॉ. शील कौशिक की कहानियों में मौजूद पारिवारिक रिश्तों की स्थिति को उद्घाटित किया गया है|

विषय परिचय और साहित्य समीक्षा -

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह परिवार बनाकर रहने में विश्वास रखता है। "परिवार का अर्थ है कुछ संबंधित लोगों का समूह जो एक ही घर में रहते हैं। परिवार के सदस्य, परिवार से जन्म, विवाह व गोद लिये जाने से संबंधित होते हैं। इससे परिवार की तीन विशेषताएं पता चलती हैं। ये हैं - दम्पति को विवाह करके पति पत्नी का नैतिक दर्जा प्राप्त होता है और वे शारीरिक संबंध भी स्थापित करते हैं। दूसरा, परिवार का अर्थ है इसके सभी सदस्यों के लिये एक ही आवासीय स्थान होना। निसन्देह, ऐसा भी देखा गया है कि कभी-कभी परिवार के एक या अधिक सदस्यों को अस्थाई रूप से काम के लिये घर से दूर भी रहना पड़ सकता है। उसी प्रकार वृद्ध माँ-बाप, चाचा-ताऊ, और उनके बच्चे भी परिवार को हिस्सा होते हैं।" 1

परिवार दो प्रकार के होते हैं - एकल परिवार और संयुक्त परिवार। संयुक्त परिवार दिनो-दिन बिखरते जा रहे हैं और आज के युग में एकल परिवारों का बाहुल्य है। यूँ तो एकल परिवार का संबंध पति-पत्नी और बच्चों तक हाँ, लेकिन माँ-बाप को भी साथ रखा जाता है। इस प्रकार एकल परिवारों में निम्न रिश्ते मौजूद रहते हैं -

1. पति-पत्नी
2. माँ-बाप और संतान
3. दादा-दादी और पौत्र
4. भाई-बहन
5. ननद-भाभी
6. सास-ससुर और बहू

ये रिश्ते खट्टे-मीठे अनुभव तो देते ही हैं, कई बार कड़वे अनुभवों को भी जन्म देते हैं। साहित्यकार जब भी अपने साहित्य की सृजना करता है, तब उसके साहित्य में इन रिश्तों का सच आना स्वाभाविक ही है। डॉ. शील कौशिक के साहित्य में भी इसे देखा जा सकता है। डॉ. शील कौशिक बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं। वे कविता, कहानी, लघुकथा, बाल साहित्य, समीक्षा आदि क्षेत्रों में निरंतर साहित्य रच रही हैं। अब तक उनके दो कहानी-संग्रह - 'महक रिश्तों की' (2003) और 'एक सच यह भी' (2008) प्रकाशित हो चुके हैं। इन दो संग्रहों में इकतीस कहानियाँ हैं, जो पारिवारिक संबंधों को बड़ी सजीवता से बयान करती हैं। हम कह सकते हैं कि रिश्ते उनकी कहानियों के केंद्र में हैं। लेखिका का दृष्टिकोण आशावादी होते हुए भी उन्होंने यथार्थ का अंकन किया है।

शील कौशिक की कहानियों में पारिवारिक रिश्ते

1. पति-पत्नी का संबंध

पति-पत्नी जीवन भर के साथी होते हैं। पुरातन पंथी सोच के अनुसार शादी के बाद पति को पत्नी का सर्वे-सर्वा माना जाता है। आधुनिक युग में भले इस सोच पर विराम लगा हो, लेकिन इसे नकारा नहीं जा

सकता कि शादी के बाद पति-पत्नी की आपसी निर्भरता बढ़ जाती है। दोनों में अगर प्रेम है, तो गृहस्थ जीवन स्वर्ग बन जाता है और अगर तनाव है तो जीवन नरक तुल्य हो जाता है। पति-पत्नी के संबंध उस समय भी बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जब बच्चे शादी के बाद स्वतंत्र जीवन की चाह रखते हैं। पति-पत्नी के संबंध को लेकर शील कौशिक की कहानियाँ – "वापसी", "वह प्रकाश रेखा", "उसका अपराधी" महत्त्वपूर्ण हैं। "वापसी" कहानी में पति-पत्नी के बिखरते-जुड़ते संबंधों को बयान किया गया है। कहानी में पति-पत्नी के बीच होने वाले मनमुटाव, नोंक-झोंक, वाद-विवाद और झगड़े को दिखाया गया है। सुधा और विनय दोनों वेतनभोगी हैं और अपने बेटे के भविष्य को लेकर सजग हैं। सुधा अपने बेटे को आइ.ए.एस. बनाना चाहती है और इसमें सफल भी होती है, लेकिन इस प्रयास में वह पति से दूर होती जाती है। एक दिन पति से नाराज़ होकर वह बेटे के पास चली जाती है। वहाँ वह पड़ोसी दम्पति को देखती है, जो मनमुटाव व शिकवे-शिकायत के बावजूद प्यार से रहते हैं। इससे प्रभावित हो सुधा भी वापस आ जाती है। दूसरी कहानी "वह प्रकाश रेखा" में सतवंती का पति जीवित नहीं। पति देह रूप में भले न हो लेकिन भारतीय नारी पति को अपने से दूर कब मानती है। सतवंती की भी यही स्थिति है। पति उससे सपनों में बात करते हैं और बेटे-बहू की उपेक्षा झेल रही सतवंती को आत्म-निर्भर बनने का संदेश देते हैं। वह कहते हैं -

"बेटों के ऊपर निर्भर रहने की परम्परागत सोच से बाहर निकल| उनके दुत्कारने पर भी उन्हीं के टुकड़ों पर क्यों पड़ी है? इस आधुनिकता की तेज हवा ने दया, धर्म और संस्कार सब उड़ा दिए हैं| तेरे पास हुनर है, आचार, पपड़ी, बड़ियाँ, सेवइयाँ बनाना जानती है, स्वेटर बुनना जानती है, सभी औरतें मिल-जुलकर सहकारी समिति बनाकर, हाथ का बना माल बेचकर, अच्छा पैसा कमाने के साथ समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है|" (पृ. – 23) (कौशिक, एक सच यह भी, 2008)

'उसका अपराधी' कहानी में भी पति-पत्नी के सुखद संबंधों को दिखाया गया है

"गायत्री! हमारे जीवन के सत्तासी बसंत गुजर गए, पर हम कभी भी आपस में नहीं झगड़े| जब तुम नाराज होती थी तो मैं चुप्पी साध जाता था| और जब मैं गुस्से में होता तो तुम दूसरे कमरे में चली जाती थी|" (पृ. – 71) (कौशिक, एक सच यह भी, 2008)

2. माँ-बाप और संतान

इस दुनिया में निस्वार्थ प्रेम माँ-बाप ही कर सकते हैं। माँ को धरती पर भगवान का रूप कहा गया है। पिता का प्रेम दिखता नहीं, लेकिन संतान के लिए पिता हर कष्ट सहने को तैयार रहता है। जहाँ माँ संतान को जन्म से पूर्व नौ माह गर्भ में रखती है, वहीं पिता ताउम्र अपनी संतान के सुखद जीवन की सोच अपने मस्तिष्क में रखता है। माँ-बाप के लिए कभी उसकी संतान बड़ी नहीं होती, इसलिए वे हर पल उसे समझाते हैं, लेकिन सारी संताने श्रवणकुमार नहीं होती। अक्सर बच्चे माँ-बाप की बातों से चिढ़ना शुरू कर देते हैं। बहुओं के आने पर स्थिति और बिगड़ जाती है, इसके लिए दोष भले बहू को दिया जाए, लेकिन बेटे भी आमतौर पर निर्दोष नहीं होते। कई बार माँ-बाप की महत्त्वाकांक्षा का भी बच्चों को सामना करना पड़ता है| इस प्रकार माँ-बाप और सन्तान के रिश्ते में कई रंग हैं और इनमे से अधिकतर रंग डॉ. शील कौशिक की कहानियों में देखने को मिलते हैं| "महक रिश्तों की" कहानी में कई रिश्तों की महक है| इसमें माँ का त्याग दिखाया गया है –

"उसकी पढाई के लिए मम्मी ने अपनी सर्विस की भी चिंता न की थी और एक लम्बा अवकाश ले लिया था| रात-दिन उन्हें उसकी देखभाल और पढ़ाई के अलावा और कुछ न सूझता था| उसकी मम्मी और उसके सामने बस अर्जुन के लिए पेड़ पर बैठी चिड़िया की आँख की तरह एक ही लक्ष्य था – मेडिकल में प्रवेश पाना|" (पृ. – 55) (कौशिक, महक रिश्तों की, 2003)

"फजली" कहानी में फजली अपने माता-पिता की पांचवी सन्तान है| गरीबी के चलते फजली का पिता फजली की माँ की इच्छा के विपरीत उसे किसी कोठी पर काम पर लगा देता है| फजली वहीं रहने लगने लगती है| फजली ख़ुश है, लेकिन ममता तो ममता होती है, पिता फजली को वापस लेने पहुँच जाता है –

"हम फजली को अपने साथ ले जाएँगे| उसकी माँ का रो-रो कर बुरा हाल है| मैं उसका अपराधी हूँ| मैं ही उसके बार-बार मना करने पर फजली को यहाँ छोड़ गया था| उसने फजली के बिना खाना-पीना त्याग दिया है| वह कहती है – हम गरीब हैं – जैसे हैं ठीक हैं| दो जून की रोटी मिले, ना मिले, पर वह फजली के बिना नहीं रह सकती|" (पृ. – 25) (कौशिक, महक रिश्तों की, 2003)

"प्रश्नों के नागफनी" पिता का महत्त्व प्रतिपादित किया है

"संयुक्त परिवार में सबके विरोध के बावजूद पापा ने उसे उच्च शिक्षा दिलाई थी|" (पृ. – 53) (कौशिक, एक सच यह भी, 2008)

माँ-बाप तो त्याग करते ही हैं, बेटे, बेटियाँ भी माँ-बाप के लिए त्याग करते हैं| सामान्यत: बेटियों को माँ-बाप के नजदीक और बेटे को पत्नी की अँगुलियों पर नाचते हुए माँ-बाप की अवमानना करते दिखाया जाता है, लेकिन डॉ. शील कौशिक ने "बिखरे पन्ने" कहानी में अवसाद ग्रस्त माँ को अवसाद से बाहर निकालने के लिए बेटे के त्याग को दिखाया है|

"उसने मन ही मन फ़ैसला किया कि वह अपनी ज़िंदगी संवारने के लिए माँ की ज़िंदगी के पन्ने बिखरने नहीं देगा इसलिए उसने कॉलिज न जाने का फ़ैसला किया|" (पृ. – 111) (कौशिक, एक सच यह भी, 2008)

कुछ कड़वे अनुभव भी इन कहानियों में हैं| माँ-बाप की जरूरत से अधिक सख्ती बच्चों को किस प्रकार प्रभावित करती है, इसे 'जुनून' कहानी में दिखाया है| मोहित पिता के नियन्त्रण से दूर होते ही बुरी संगत में जा पड़ता है| बेटों की उपेक्षा को भी दिखाया गया है| "जलते-बुझते दीप" कहानी में बड़े बेटे माँ को अपने पास नहीं बुलाते| कहानी "वह प्रकाश रेखा" में भी बेटा माँ को डांटता है|

3. दादा-दादी और पौत्र-पौत्री के संबंध

एक कहावत है "मूल से ब्याज प्यारा", जो बताती है कि दादा-दादी को पुत्र-पुत्री की अपेक्षा पौत्र-पौत्री अधिक प्यारे होते हैं| दादा-दादी और पौत्र-पौत्री के संबंध डॉ. शील कौशिक की कहानियों में कम दिखे हैं, लेकिन ऐसा भी नहीं है कि इनका वर्णन बिलकुल भी न हुआ हो| "जलते-बुझते दीप" कहानी की रानो छोटे बेटे के पास रहती है| बेटा और बहू उसकी ख़ूब सेवा करते हैं, लेकिन वह बड़े बेटों के पास जाना चाहती है ताकि अपने पोते-पोती से मिल सके| कहानी "महक रिश्तों की" में पंकज सोचता है –

"उसके माँ-बाप, दादा-दादी सभी ने उसका भविष्य संवारने के लिए कितना त्याग किया है|" (पृ. – 54) (कौशिक, महक रिश्तों की, 2003)

4. भाई – बहन के संबंध

भाई-बहन का संबंध बेहद प्यारा है, जिसमें ख़ूब नोंक-झोंक चलती है, लेकिन इसके नीचे प्यार छुपा रहता है| भारत में रक्षा बंधन का त्यौहार इस रिश्ते को समर्पित है| बहन भाई के लिए दुआएँ मांगती है तो भाई उसकी रक्षा का दायित्व उठाता है| डॉ. शील कौशिक की कहानियों में भाई-बहन के रिश्ते का खूबसूरत वर्णन मिलता है| "आखिरी इंतजाम" इस रिश्ते को दिखाती कहानी है| विनय और सीमा एक दूसरे से बेहद प्यार करते हैं| विनय बहन की मदद के लिए अपनी किडनी तक बेच देता है| उनके प्यार को देखकर विनय की पत्नी कहती है –

"भाई-बहन के रिश्ते की मिठास को किसी की नजर न लगे|"(पृ. – 32)

(कौशिक, महक रिश्तों की, 2003)

5. ननद- भाभी का संबंध

ननद-भाभी का संबंध भी बड़ा नाजुक संबंध है| कई बार ननद भाभी के खिलाफ भाई के कान भरने का काम करती हैं| डॉ. शील कौशिक की कहानियों में ननद भाभी के संबंध परोक्ष रूप में हैं| न ननद बुरा करती है और न ही भाभी ननद के घर आने पर नाक-भौं चढ़ाती है|

6. सास- बहू के संबंध

सास- बहू का रिश्ता पारविरिक रिश्तों में बेहद पेचीदा रिश्ता कहा जा सकता है| "यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैंब्रिज के सीनियर ट्यूटर, राइटर और मनोचिकित्सक, डा. टेरी आप्टर ने अपनी किताब 'व्हाट डू यू वौंट फ्रौम मी' के लिए की गई अपनी एक रिसर्च में पाया कि 50 प्रतिशत मामलों में सास-बहू का रिश्ता दुरूह और कलहपूर्ण होता है| 55 प्रतिशत बुजुर्ग महिलाओं ने स्वीकार किया कि वे खुद को बहू के साथ असहज और तनावग्रस्त पाती हैं, जबकि करीब दो तिहाई महिलाओं ने महसूस किया कि उन्हें उन की बहू ने अपने ही घर में अलग-थलग कर दिया है|" 2

सास-बहू के रिश्ते के इसी तनाव के चलते वर्तमान में वृद्धाश्रम में रहने वालों में बढ़ोतरी हुई है| नई पीढ़ी माँ-बाप की या कहें कि बहुएँ सास-ससुर की सेवा करने में यकीन नहीं रखती, परिणामत: बेटे माँ-बाप को वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं| "हाल के एक सर्वेक्षण में यह खुलासा हुआ है कि अपने बुजुर्गों की देखरेख करनेवाले 35 फीसदी लोगों को उनकी (बुजुर्गों की)सेवा करने में खुशी महसूस नहीं होती| परोपकारी संगठन हेल्पएज इंडिया ने यह सर्वे किया है| उसने इसके नतीजे अपनी रिपोर्ट 'भारत में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार: देखरेख करने में परिवार की भूमिका: चुनौतियां और प्रतिक्रिया' में पेश की है| इस सर्वे में हिस्सा लेने वाले 29 फीसदी लोग यह स्वीकार करते हैं कि वह अपने बुजुर्गों को घर में रखने के बजाय वृद्धाश्रम में रखना चाहेंगे| इस सर्वेक्षण में हिस्सा लेने वाले लोगों में से एक-चौथाई लोगों का मानना है कि बुजुर्गों की देखभाल करने में उन्हें निराशा और कुंठा होती है| उन्होंने यह भी बताया कि वे इस वजह से परिवार के बुजुर्ग सदस्यों पर गुस्सा कर बैठते हैं|" 3

डॉ. शील कौशिक की कहानियों में इस कडवे यथार्थ का वर्णन है| "वह प्रकाश रेखा" में सतवंती का बेटा-बहू भले ख़ुद उसे वृद्धाश्रम छोड़कर नहीं आते, लेकिन वे ऐसे हालात पैदा कर देते हैं कि सतवंती ख़ुद वृद्धाश्रम जाने का फ़ैसला ले लेती है| "आईना" कहानी में दिखाया गया है कि इतिहास ख़ुद को दोहाराता है| विद्या को जब उसकी बहू शादी में नहीं जाने देती तो उसे पुराने दिन याद आ जाते हैं –

"बिलकुल ऐसे ही मेरी सास मेरे आगे गिड़गिड़ा रही थी| 'विद्या मैं तेरे आगे हाथ जोड़ती हूँ| मुझे अपने भाई से मिलने के लिए जाना है| उसके लड़के की शादी है| भगवान तेरी काय में सुख देगा, तुझे बहुत पुन्न लगेगा, मुझे वहाँ जाने दे|'

परन्तु मैं टस से मस न हुई थी और झिड़क कर कहा था, शर्म नहीं आती| इस बुढ़ापे में घूमने-फिरने की पड़ी है| हमसे अपनी रिश्तेदारियाँ नहीं निभाई जाती| अब उन्हें ज़रूरत होगी तो आकर ले जाएँगे|" (पृ. – 36)(कौशिक, एक सच यह भी, 2008)

कई बार बहुएँ सास से दुर्व्यवहार तो करती हैं, लेकिन दिखावा ऐसा करेंगी कि उन जैसी कोई बहू है ही नहीं| डॉ. शील कौशिक की कहानी "भ्रमजाल" की पात्रा सुहासिनी ऐसी ही बहू है| यह सच है कि सास-बहू के रिश्ते का जब भी जिक्र होता है, हमारा नज़रिया नकारात्मक हो जाता है, लेकिन ज़िंदगी में कभी भी एकरूपता संभव नहीं| सास-बहू के रिश्ते में भी ऐसा ही है| सास-बहू में भी माँ-बेटी सा प्यार संभव है| डॉ. शील कौशिक ने इस पहलू को भी उजागर किया है| "आज़ादी की बेला" में एक आदर्श सास का चित्रण है, जिसे पाकर बहू धन्य हो जाती है|

"उस घर में सब अच्छे ही लगे| सबसे बढकर उसकी अपनी माँ समान सास जो सबके बीच मधुर संबंधों के सेतु को बनाए हुए थी|" (पृ. – 96) (कौशिक, एक सच यह भी, 2008)

निष्कर्ष

डॉ. शील कौशिक के कहानी-संग्रहों को पढ़कर यह महसूस होता है कि उन्होंने पारिवारिक रिश्तों का गहन अध्ययन किया है| समाज के यथार्थ को भी दिखाया है, वहीं आदर्श रूप भी प्रस्तुत किया है, जिससे समाज को दिशा मिलती है|

सन्दर्भ सूची

1. स्कॉटबज्ज (https://www.scotbuzz.org/2018/10/parivar.html)
2. सरिता (https://www.sarita.in/relationship/mother-daughter-relationship-of-the-two-banks-of-the-river)
3. इकॉनमिक टाइम्स (https://economictimes.indiatimes.com/hindi/news/29-percent-people-want-to-accommodate-their-senior-citizen-in-old-age-home/articleshow/69798017.cms)
4. डॉ. शील कौशिक. (2008). एक सच यह भी. दिल्ली: पूनम प्रकाशन.
5. डॉ. शील कौशिक. (2003). महक रिश्तों की. दिल्ली: पूनम प्रकाशन.